कक्षा - दस

विषय -हिंदी

क्षितिज भाग-2
पाठ-5
कविता - अट नहीं रही है
कवि - श्री सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

मोड्यूल-१/१

प्रस्तुतकर्ता:-

शिवदत्त शर्मा

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय , नरौरा

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला - जीवन परिचय

- सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म बंगाल की महिषादल रियासत (जिला मेदिनीपुर) में माघ शुक्ल ११, संवत् १९५५, तदनुसार २१ फ़रवरी, सन् १८९९ में हुआ था। वसंत पंचमी पर उनका जन्मदिन मनाने की परंपरा १९३० में प्रारंभ हुई। उनका जन्म मंगलवार को हुआ था। जन्म-कुण्डली बनाने वाले पंडित के कहने से उनका नाम सुर्जकुमार रखा गया। उनके पिता पंडित रामसहाय तिवारी उन्नाव (बैसवाड़ा) के रहने वाले थे और महिषादल में सिपाही की नौकरी करते थे। वे मूल रूप से उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के गढ़ाकोला नामक गाँव के निवासी थे।

अट नहीं रही है
आभा फागुन की तन
सट नहीं रही है।

कहीं साँस लेते हो
घर -घर भर देते हो ,
उड़ने को नभ में तुम
पर-पर कर देते हो ,
आँख हटाता हूँ तो
हट नहीं रही है।

भावार्थ :-

श्री सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा रचित 'अट नहीं रही है' कविता में ऋतुराज वसंत के फागुन महीने के अद्वितीय एवं अनुपम सौंदर्य का वर्णन किया गया है। वसंत ऋतु का आगमन फागुन मास में होता है। अतः फागुन मास का प्राकृतिक सौंदर्य , इसकी आभा इतनी अधिक है कि इसकी सुंदरता कहीं समा नहीं पा रही है।

कवि आगे कह रहे हैं कि जब तुम सांस लेते हो अर्थात सुगंधित हवा के साथ संपूर्ण वातावरण को सुगंधित कर देते हो तबअपनी खुशबू से हर घर को सुगंध से भर देते हो |फागुन मास का अनुपम सौन्दर्य इतना मादक है कि वह कवि को आसमान में उड़ने के लिए व्याकुल कर देता है| कवि की आँखें उस अनुपम सौंदर्य को देखने में इतनी तल्लीन हैं कि उस सुंदरता को देखने से जी नहीं भर रहा है| अतः उसे देखने से कवि अपनी आँखें हटा नहीं पा रहे हैं|

पत्तों से लदी डाल
कहीं हरी, कहीं लाल,
कहीं पड़ी है उर में
मंद-गंध-पुष्प -माल,
पाट-पाट शोभा- श्री
पट नहीं रही है।

भावार्थ :-

फागुन महीने में पतझड़ होने के बाद पेड़ों की शाखाएँ नए-नए पत्तों से लद गयीं हैं जो अनेक रंग के हैं। कहीं हरे पत्ते लगे हुए हैं तो कहीं लाल पत्ते व कोपले लगी हुई हैं। वातावरण में चारों तरफ रंग-बिरंगे सुगंधित फूल खिले हुए हैं। ऐसा लगता है मानो पेड़ों के गले में सुगंधित फूलों की माला सुशोभित हो रही है। हर तरफ प्राकृतिक सौंदर्य की अनुपम छटा बिखर रही है और वह इतनी अधिक है कि पूरी धरती भी उसे समाने के लिए कम पड़ रही है।

प्रश्न-उत्तर

1. कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही है ?

उत्तर- फागुन महीने के प्राकृतिक व अनुपम सौन्दर्य व अलौकिक छटा को देखने से कवि की आँख तृप्त नहीं हो रहीं हैं। अतः कवि की आँख फागुन की सुंदरता को देखने से हट नहीं रहीं हैं।

२. प्रस्तुत कविता में कवि ने प्रकृति की व्यापकता का वर्णन किन-किन रूपों में किया है ?

उत्तर -समस्त वातावरण प्राकृतिक सौंदर्य से भर गया है । नए-नए पत्ते पेड़ों पर आ गए हैं । चारों तरफ सुगंधित रंग-बिरंगे फूल खिल गए हैं। सर्वत्र प्राकृतिक सौंदर्य की अनुपम छटा छाई हुई है।

३. फागुन में ऐसा क्या होता है जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है ?

उत्तर- फागुन में प्राकृतिक सौंदर्य अपने चरम उत्कर्ष पर होता है । फागुन में पेड़ों पर नए -नए पत्ते एवं फूल आ जाते हैं । शीतल मंद सुगंध हवा बहती है । इन्हीं विशेषताओं के आधार पर फागुन दूसरी ऋतुओं से भिन्न होता है ।